'नुशू': औरतों की अपनी भाषा

जुही

चीन के दक्षिण-पश्चिम भाग में हुनान प्रांत है। यहां की औरतें सदियों तक 'नुशू' लिपि का इस्तेमाल करती थीं। 'नुशू'-केवल औरतों की लिपि। सिर्फ़ औरतों की भाषा। उनकी अभिव्यक्ति का साधन। उनके प्रतिवाद का प्रतीक। ज़्यांगयोंग प्रांत में शांगज़्यांगजू ज़िला है। इस ज़िले की रोज़मर्रा की ज़िंदगी में औरतों की साहित्यिक संस्कृति इस हद तक प्रचलित थी कि, चीन की मुख्य लिपि को वहां 'नांज़ी' के नाम से जाना जाता था। 'नांज़ी' यानी मर्दों के शब्द। नुशू की अपनी एक अलग लिपि थी। इसे जानने, पढने, लिखने वाली सिर्फ़ औरतें थीं। इसलिए शांगज़्यांगजू की औरतों के पास अपनी ज़िंदगी की सच्चाई बयान करने का अधिकार और आज़ादी दोनों थीं। रिवाज के अनुसार औरतों को नांज़ी में पढ़ने का चलन नहीं था। यही वजह थी कि वह उन तमाम किताबी मूल पाठों की शिक्षा से बची थीं जो औरतों को कमतरी और ग़ैरबराबरी का सबक सिखाते हैं। न ही औरतों को मर्दों के सामने अपने संघर्षों की दास्तान का बखान करने के लिए जूझना पड़ता था। पर इसका एक दुखद पहलू भी था।

नुशू की अपनी एक अलग लिपि थी। इसे जानने, पढ़ने, लिखने वाली सिर्फ़ औरतें थीं। इसलिए शांगज़्यांगजू की औरतों के पास अपनी ज़िंदगी की सच्चाई बयान करने का अधिकार और आज़ादी दोनों थीं।

कठिनाइयों का दौर

यह भाषा मर्दों की नहीं थी इसलिए, इसमें लिखी रचनाओं का उस समय की प्रधान और प्रचलित मान्यताओं पर असर नहीं था। पर फिर भी औरतें इन सभी तमाम सामाजिक बंधनों के बावजूद अपना काम निकालने के तरीके खोज ही लेती थीं। औरतों के आपस के रिश्ते भी बहुत मज़बूत थे। नुशू के माध्यम से एक दूसरे से उनके जज़बाती और आर्थिक रिश्ते प्रगाढ़ होते थे और इन रिश्तों में वे अपने जीवन के दुख-दर्द, ग़ैरबराबरी को बांट कर विरोध करती थीं।

नुशू लिपि लगभग एक हज़ार साल तक प्रचलित रही। सिलाई-कढ़ाई करते हुए गर्मियों के दिनों में छतों पर और सर्दियों में आग तापती हुई औरते नुशू में गीत रचती और गाती थीं। लगभग सभी औरतें इस भाषा को पढ़ सकती थीं। हालांकि इसे लिखने वाली औरतों की संख्या काफ़ी कम थी। बहुत-सी औरतों को इसमें लिखे गीत, पंक्तियां और श्लोक मुंहजुबानी याद थे।

1989 में चीन में क्रांति आई। सामाजिक बदलाव आए। कम उम्र की औरतें अब नुशू नहीं सीखती थीं। जैसे-जैसे पुरानी पीढ़ी खत्म होती गई, नुशू में लिखने वाली लेखिकाओं की तादाद कम होती गई। धीरे-धीरे नुशू भाषा लुप्त हो गई। चीन में रिवाज के अनुसार औरतों की पसंद की रचनाएं, लेख, कहानियां उनके मरने पर उनके साथ दफना

दिए जाते थे। मानना था कि परलोक में औरतें उसका मज़ा ले सकेंगीं पर इसी की वजह से उन्नीसवीं सदी के पहले की कोई भी रचना हमें नहीं मिलती। मौजूदा रचनाएं जो हमें मिली हैं इसी शताब्दी के रचनाकारों की हैं। कागज़, कपड़े और पंखों पर लिखी यह रचनाओं में औरतों की आत्मकथाएं, बहनचारे की कसमें, संवेदनाओं और प्रत्यारोपों की चिट्ठियां, दुल्हनों के लिए किताबें, स्थानीय और राष्ट्रीय घटनाओं का ब्यौरा, प्रार्थनाएं लड़कियों के लिए कन्फ्यूशियस के मतों का उल्लेख और चीनी लोककथाएं आदि शामिल हैं।

नुशू : प्रतिशोध की भाषा

नुशू-विरोध की भाषा है। इस भाषा की लेखिकाओं को भी अन्य चीनी औरतों की तरह शारीरिक और मानसिक प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता था। ऐसा तब-तब होता था, जब-जब वे समाज में फैले, ग़ैरबराबरी के ढांचें को बदलना चाहती थीं। शांगज़्यांगजू की औरतों को मर्दों के इतिहास ने नज़रअंदाज़ किया। इन औरतों ने अपना खुद का इतिहास रचा। अपना ज्ञान बांटा और सदियों तक खुद को मां से बेटी तक विरासत में मिलने वाली साहित्यिक परंपराओं के केंद्र-बिन्दु पर रखा। □

मूल लेख : कैथो सिल्बर
साभार : विमेन इन एक्शन 3/92
आईसिस इंटरनेशनल, मनीला